लुई आल्थूसर और संरचनावाद

डॉ0 राकेश प्रताप शाही*

फ्रांस के समाजशास्त्रियों को अनेक कालजयी महत्वपूर्ण चिन्तन धाराओं के प्रतिपादन का श्रेय प्राप्त है। वहाँ ऐसी ही एक चिन्तन धारा बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में संरचनावाद के नाम से प्रकाशित हुई थी। फ्रांसीसी मूल का होने के कारण इस चिन्तनधारा को फ्रांसीसी संरचनावाद के नाम से भी जाना जाता है। उन दिनों में फ्रांस के बौद्धिक जगत में मानवतावाद की खासकर जीन पाल सात्र (Jean Paul Sartre) के अस्तित्वाद (Existgentialism) की धूम मची हुई थी। सात्र व्यक्ति एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता के हिमायती थे। उनका मानना था कि लोग अपने निर्णय के अनुसार क्रिया करते हैं, न कि सामाजिक नियमों और सामाजिक संरचना की अपेक्षा के अनुसार।' सात्र के इसी व्यक्तिवादी अस्तित्वाद के विरोध में फ्रांसीसी संरचनावाद प्रकाश में आया। अतः संरचनावाद प्रकाश में आया। अतः संरचनावाद प्रकाश में आया। अतः संरचनावाद स्वभावतः व्यक्तिगत स्वतंत्रता की हिमायत करने के बदले सामाजिक संरचना की प्रधानता स्वीकार करता है और मानता है कि लोग अपने निर्णय के अनुसार नहीं, अपितु सामाजिक संरचना की अपेक्षा के अनुसार क्रिया करते हैं। अस्तु, प्रथम दृष्ट्या संरचनावाद को सामाजिक संरचना की व्याख्या के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

सामाजिक संरचना का अध्ययन समाजशास्त्रियों के लिए कोई नयी बात नहीं है। कार्ल मार्क्स ने इतिहास की भौतिकतावादी व्याख्या के अन्तर्गत सामाजिक संरचना को ऊपरी संरचना या वैचारिकी (Superstructure or Ideology) का निर्धारण करने वाली आर्थिक संरचना के रूप में प्रस्तुत किया था। हरबर्ट स्पेंसर ने सामाजिक संरचना को उद्विकास की प्रक्रिया में विभेदीकृत होते हुये बताया था। संरचनात्मक प्रकार्यवादी टैल्काट पार्सन्स ने सामाजिक संरचना को सक्रिय व्यवस्था के अन्दर प्रकार्यात्मक अनिवार्यताओं की पूर्ति के एक साधन के रूप में स्वीकार किया था। इसी तरह अन्य समाजशास्त्रियों ने भी अपनी सैद्धान्तिक रचनाओं में सामाजिक संरचना की अवधारणा को किसी न किसी हद तक और किसी न किसी रूप में अपनाया है। परन्तु इन सारे पूर्ववर्ती अध्ययनों में सामाजिक संरचना को मुख्य अध्ययन विषय के सहायक या आश्रित विषय के रू॰ में ही प्रस्तुत किया गया है, और किसी भी अध्ययन ने इसे 'स्वतंत्र' विषय का दर्जा नहीं दिया। संरचनावाद संरचना को स्वतंत्र अध्ययन विषय के रूप में स्वीकार करता है। इसी कारण इसे अपना यह नाम अर्थात संरचनावाद नाम प्राप्त हुआ है। बताने की आवश्यकता नहीं कि किसी अध्ययन का जो केन्द्रीय या मुख्य विषय होता हैं सामान्यतया उसी का नाम उस अध्ययन को प्राप्त होता है। एक बात और पूर्ववर्ती समाजशास्त्रीय सैद्धान्तिकों ने 'संरचना' का नहीं, अपितु 'सामाजिक संरचना' का अध्ययन किया है, जबकि फ्रांसीसी संरचनावाद 'सामाजिक संरचना' का नहीं अपितु 'संरचना का अध्ययन करता है।'' संरचनावादी विचारक संरचना को वस्तुनिष्ठ यथार्थ (Objective reality) के रूप में देखते हैं और मानते है कि किसी भी वस्तु या घटना की बाहरी संरचना (Surface configuration) स्वयं सामाजिक संरचना भी, इसी वस्तुनिष्ठ यथार्थ का प्रतिनिधित्व या आभास (Appearance) होती है। इस दृष्टि से समाजशास्त्रीय संरचनावाद को उस संरचना की व्याख्या करने वाला सिद्धान्त कहा जा सकता है जो सामाजिक घटनाओं की बाहरी संरचना अर्थात, सामाजिक संरचना के पीछे या मूल में यथार्थ (Immanent or underlying reality) के रूप में विद्यमान होती है।

सामाजिक घटनाओं की बाहरी संरचना, अर्थात् सामाजिक संरचना, के मूल में निहित जिस यथार्थ को संरचनावादियों ने 'संरचना' नाम देकर अपना अध्ययन–विषय बनाया है उसे उन्होंने सामान्यता 'भाषायी संरचना'' (Lingulistic structure) के रूप में परिभाषित किया है। रोलैण्ड बार्विज (Roland

* **समाजशास्त्र विभाग, श्री भगवान महावीर पी0 जी0 कालेज, पावानगर (फाजिलनगर), कुशीनगर**

Barthes) किसी भी विषय के अध्ययन में संरचनात्मक भाषा विज्ञान की शब्दावलियों और प्रणालियों के निरन्तर प्रयोग को ही सच्चे संरचनावादी ही पहचान मानते हैं। जॉन स्टरॉक के शब्दों में, ''रोलैण्ड बार्थिज का कहना है कि संरचनात्मक भाषाशास्त्र से लिए गए नाना शब्दों के प्रयोग द्वारा ही सच्चे संरचनावादी की पहचान होती है'' वैसे क्लाड लेवी–स्ट्रास (Clauds Levi-Strauss) सामाजिक संरचना के मूल में निहित 'वास्तविक' संरचना को 'भाषायी संरचना' के रूप में नहीं, अपितु अचेतन मन की तार्किक संरचना (Logical Structure of the unconscious mind) के रूप में पहचानते हैं। लेवी–स्ट्रास का दावा है कि नातेदारी आदि सामाजिक घटनाओं की संरचना, तथा स्वयं भाषा की संरचना भी, अचेतन मन की तार्किक संरचना का उत्पाद होती है। सामाजिक घटनाओं के संरचनावादी अध्ययन में सामाजिक संरचना के बदले अंतर्निहित भाषायी संरचना पर ध्यान केंद्रित किया जाना ''भाषायी मोड़'' (Linguistic turn) कहलाता है।[6]

संरचनावाद विविध क्षेत्रों में 'विविध विकासों का संयुक्त परिणाम है। परन्तु स्विस भाषावैज्ञानिक फर्डिनण्ड डी सस्योर (Ferdinand de Saussure 1857-1913) के भाषा वैज्ञानिक संरचनावाद (Lignuistic Structuralism) को आधुनिक संरचनावाद का मूल स्रोत एवं प्रबलतम आधार माना जाता है।[7] सस्योर का भाषावैज्ञानिक संरचनावाद भाषा की संरचना का वैधानिक अध्ययन करता रहा है। वहीं से संरचनावाद ने जैक लकाँ (Lacques Lacan 1901-81) क्लाड लेवीस्ट्रास (Claude Levi-Strauss 1908) लुई आल्थूसर (Louis Althusser 1913-90) आदि की कोशिशों से अन्य सामाजिक एवं मानवशास्त्रीय घटनाओं की व्याख्या के क्षेत्र में प्रवेश किया।

संरचनावादियों द्वारा सामाजिक घटनाओं की संरचनावादी व्याख्यायें प्रायः कार्ल मार्क्स और सिग्मण्ड फ्रायड के विचारों के परिप्रेक्ष्य में की गयी है। परिणामतः ये व्याख्यायें इन शास्त्रीय विचारकों के विचारों की संरचनावादी पुनर्व्याख्याओं के रूप में प्रकाशित हुयी हैं।[8] लुई आल्थूसर ने मार्क्सवाद के वैज्ञानिक चरित्र को उभारने के लिए उसकी संरचनात्मक व्याख्या की है तो लेवी–स्ट्रास और जैक लकाँ ने फ्रायड को संरचनावादी दृष्टिकोण से पुनर्परिभाषित करने का प्रयास किया है। विभिन्न संरचनावादियों के बीच पाये जाने वाले इस संदर्भ–भेद (difference of contexts) के बावजूद संरचनावादी दृष्टिकोण की मुख्य परिचायक विशेषतायें इन सब में सामान्य रूप से विद्यमान नजर आती है। ये विशेषतायें अति संक्षेप में नीचे प्रस्तुत हैं–

1. संरचनावाद कोई दर्शन नहीं, अपितु सामाजिक व सांस्कृतिक विज्ञानों की एक पद्धति है।
2. संरचनावाद सामाजिक घटनाओं की बाहरी सामाजिक संरचना का नहीं, अपितु उसके मूल में विद्यमान आन्तरिक संरचना ही उसकी वास्तविक संरचना होती है। बाहरी सामाजिक संरचना उस वास्तविक आन्तरिक संरचना का प्रतिबिम्ब का आभास मात्र होती है।
3. संरचनावाद सामाजिक घटनाओं की वास्तविक आन्तरिक संरचना को भाषायी संरचना के रूप में पहचान है। क्लाड लेवी–स्ट्रास सम्भवतः ऐसे इकलौते संरचनात्मक विचारक हैं जो भाषायी संरचना को नहीं, अपितु अचेतन मन की तार्किक संरचना को सामाजिक घटनाओं की आन्तरिक संरचना मानते हैं।
4. संरचनावाद संरचना के एक कालिक या वर्णनात्मक (Synchronic) अध्ययन का हिमायती है, ऐतिहासिक अध्ययन (diachronic study) का नहीं। एक ही काल–खण्ड तक सीमित रहने वाले अध्ययन को एक कालिक तथा काल–विशेष तक ही सीमित न रहने वाले अध्ययन को ऐतिहासिक कहते हैं।
5. संरचनावाद संरचना को आत्म–निर्भर (self contained) तत्वों से निर्मित नहीं, अपितु परस्पर अनुकूलित (mutually conditimed) तत्वों से निर्मित मानता है, और इसी रूप में उसका अध्ययन भी करता है। इससे स्पष्ट है कि संरचनावाद संरचना के समष्टिगत अध्ययन का हिमायती है व्यष्टिगत अध्ययन का नहीं।

6. समाजशास्त्रीय संरचनावाद का मूल स्रोत स्विस भाषावैज्ञानिक फर्डिनण्ड डी सस्योर का भाषाशास्त्रीय संरचनात्मक है जो भाषा की संरचना के वैज्ञानिक अध्ययन के प्रति समर्पित है।

लुई आल्थूसर का संरचनात्मक मार्क्सवाद (Louis Althusser : Structural Morxism)

फ्रांसीसी साम्यवादी विचारक लुई आल्थूसर का संरचनावाद मार्क्सवाद की संरचनावादी पुनर्व्याख्या है। वैसे आल्थूसर स्वयं ''संरचनावादी वैचारिकी'' के साथ अपने किसी भी सम्बन्ध को अस्वीकार करते हैं।[10] परन्तु यदि मारिस गाडलियर (Maurice Godelier) का यह कहना सही माना जाय कि अन्तर्निहित अप्रकट संरचना पर ध्यान केन्द्रित करना ही संरचनावाद की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहचान है[11], तो आल्थूसर को संरचनावादी मानने से इनकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि मार्क्सवाद की पुनर्व्याख्या में जिस 'आर्थिक संरचना' पर ध्यान केन्द्रित करते हैं उसे वे 'आन्तरिक संरचना' के रूप में ही देखते हैं।

आल्थूसर वैज्ञानिक चरित्र को मार्क्सवाद की मौलिक पहचान मानते थे। 20वीं सदी के पूर्वार्ध तक मार्क्सवाद की व्याख्याओं में मार्क्स के ऊपर हीगल के आदर्शवादी दर्शन के प्रभावों को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया जाता रहा है और जाने–अनजाने उनके मौलिक विचारों की अनदेखी की जाती रही है। मार्क्सवाद के वैज्ञानिक चरित्र का हिमायती होने के कारण आल्थूसर को उसकी अनदेखी बरदाश्त न थी। अतः उन्होंने मार्क्सवाद की पुंनर्व्याख्या करके उसके वैज्ञानिक चरित्र को उभारने की बात सोची। यह कार्य किसी तटस्थ या वैज्ञानिक उपागम की सहायता से ही हो सकता था। उसी बीच 1960 के दशक में पेरिस में संरचनावादी चिन्तन का फैशन सा चल निकला तो मानवी विषयों (Humanities) को भी सटीक नियम बनाकर वैज्ञानिक प्रस्थिति प्राप्त करने में समर्थ बना सकता था।[12] आल्थूसर को मनचाही मुराद मिल गयी और उन्होंने मार्क्सवाद की संरचनावादी पुनर्व्याख्या का बीड़ा उठा लिया। आल्थूसर की स्वतंत्र कृति ''फार मार्क्स'' (Pour Marx 1965, Trans for Marx, 1979) तथा आल्थूसर एवं ई. बालीबर (E. Balibar) की संयुक्त कृति ''रीडिंग कैपिटल'' (Lire le Capital, 1968, Tans. Reading Capital 1977) वे प्रमुख कृतियाँ हैं जिनमें यह पुनर्व्याख्या सविस्तार प्रकाशित हुई है। आल्थूसर द्वारा मार्क्सवाद की संरचनावादी पुनर्व्याख्या के प्रमुख बिन्दु यहाँ साररूप में प्रस्तुत हैं :

वैज्ञानिक मार्क्सवाद की खोज (Quest of Scientific Marxism) : मार्क्स की कृतियों तथा मार्क्स एवं एलिन्स की संयुक्त कृतियों का गहन अध्ययन करने के बाद आल्थूसर इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि 1845 में जब एंगिल्स के साथ मिलकर मार्क्स ने 'द जर्मन आइडियॉलाजी' की रचना की, उस समय मार्क्स के बौद्धिक विकास में नया मोड़ आ गया था। यह मोड़ कार्ल मार्क्स की चिन्तन धारा में 'ज्ञानशास्त्रीय विच्छंखलता' (Epistemological break) का द्योतक है।[13] इसके साथ ही 1845 के पहले का मार्क्स (अर्थात हीगल एवं फायरबाक के प्रभावों के कारण आदर्शवादी रूझान वाला मार्क्स) वैज्ञानिक सिद्धान्त का निर्माण करने वाला मार्क्स बन गया था। आल्थूसर के अनुसार, मार्क्सवाद का यही वैज्ञानिक स्वरूप वास्तविक मार्क्सवाद (Genuine Marxism) जो 'ऐतिहासिक भौतिकतावाद' (Historical Materialism) के नाम से लोकप्रिय हुआ है। बाद में आल्थूसर को विश्वास होने लगा था कि मार्क्स की 1845 के बाद की कृतियों में भी उनकी प्रारम्भिक कृतियों की दार्शनिक छाप किसी न किसी हद तक विद्यमान रह गयी थी। तथापि वे अपने इस दावे पर कायम रहे कि मार्क्स की 1845 के बाद की कृतियों में 'ज्ञानशास्त्रीय विच्छंखलता'' आयी है। इस ज्ञानशास्त्रीय मोड़ के साथ उत्पन्न हुआ वैज्ञानिक मार्क्सवाद स्थापित तो हुआ मार्क्स एवं एंगिल्स की संयुक्त कृति ''द जर्मन आइडियोलाजी'' में परन्तु इसका पूर्ण विकसित रूप मार्क्स की 'पूंजी' (Das Capital) में तथा इसका पद्धतिशास्त्र 'गुड्रिस' (Grundirisse) की भूमिका में द्रष्टव्य है।[15] ऐतिहासिक मूलभूत मान्यता यह नहीं है कि ऐतिहासिक यथार्थ के कुछ पहलू (अर्थात ऊपरी संरचना) उसके अन्य पहलुओं (अर्थात उपसंरचना) पर निर्भर होते हैं, अपितु इसकी मूलभूत मान्यता यह है कि ऐतिहासिक यथार्थ का हर पहलू समष्टि पर निर्भर होता है।[16] कार्ल मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद को आल्थूसर प्राचीन यूनान में थेल्स (Thales) द्वारा गणित को गवेषणा तथा सत्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में न्यूटन (Newton) द्वारा भौतिकी की पुनर्रचना के समकक्ष मानते हैं।

आल्थूसर मार्क्सवाद के अन्दर ''ज्ञानशास्त्रीय विच्छंखलता या मोड़'' का निर्धारण करने के लिए मार्क्स की कृतियों का ''लाक्षणिक पठन'' (Symptomatic reading) करते हैं।[16] 'लाक्षणिक पठन' की अवधारणा को वे फ्रायड के 'मनोविश्लेषण' (Psychoanalysis) से लेते हैं। मनोविश्लेषण के अन्दर–लाक्षणिक पठन मरीज के परीक्षण की एक प्रणाली है जिसमें मरीज की क्रियाओं एवं कथनों को उसकी आन्तरिक व्याधिकीय दशा व्यक्त करने वाले प्रतीकों के रूप में देखा जाता है। मार्क्स की कृतियों के लाक्षणिक पठन में आल्थूसर सर्वप्रथम 1845 के बाद की कृतियों का अध्ययन करके ऐतिहासिक भौतिकवाद के लक्षण संग्रहीत करते हैं। तत्पश्चात् वे इन्हीं लक्षणों के परिप्रेक्ष्य में मार्क्स की 1845 के पहले की कृतियों का अध्ययन करते हुए पता लगाने का प्रयास करते हैं कि इन लक्षणों में से कौन से लक्षण पूर्ववर्ती कृतियों में नहीं मिलते। इस तरह के मार्क्स की प्रारम्भिक एवं बाद की कृतियों के बीच आधारभूत अन्तराल (raqdical discontinuty) का पता लगाते हैं और उस अन्तराल को ही 'ज्ञानशास्त्रीय मोड़ या विच्छंखलन' की संज्ञा देते है।[19] यह अन्तराल जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, हीगल से प्रभावित मार्क्सवाद तथा वैज्ञानिक मार्क्सवाद के बीच का अन्तराल है।

2. **वैज्ञानिक मार्क्सवाद की केन्द्रीय अवधारणा : उत्पादन रीति** (The Key-Concept of Scientific Marxism : Mode of Production)[20] आल्थूसर के अनुसार, वैज्ञानिक मार्क्सवाद का एक महत्वपूर्ण मुद्दा आर्थिक प्रघटनाओं की आधारभूत अवधारणाओं की व्याख्या है। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवधारणा 'उत्पादन–रीति' है। उत्पादन–रीति सम्बन्धों की एक जटिल संरचना है जिसे दो रूपों में परिभाषित किया जाना अनिवार्य है– वैश्विक संरचना के रूप में तथा क्षेत्रीय संरचना के रूप में।

अ. **उत्पादन रीति की वैष्विक संरचना** (Global Structure of the Mode of Production) उत्पादन रीति की सामान्य जटिलता (general complexity) को ध्यान में रखते हुये इसे परिभाषित किये जाने पर इसकी वैश्विक संरचना उजागर होती है। वैश्विक संरचना उत्पादन–रीति के मूलभूत तत्वों का एकीकृत सम्बन्ध होती है। उत्पादन–रीति के मूलभूत तत्व तीन हैं – 1. श्रमिक जो उत्पादन की प्रक्रिया में श्रम करता है, 2. उत्पादन के साधन जैसे : भूमि, यंत्र, प्लाण्ट तथा अन्य प्राविधिक सुविधाऐं एवं 3. अश्रमिक जो अतिरिक्त उत्पाद को हड़पता है। इन तत्वों के बीच दो तरह के संयोजक संबंध पाये जाते हैं। 1. उत्पादन की प्रक्रिया में श्रम का नियंत्रण तथा 2. पूँजीगत सम्पत्ति का स्वामित्व, अस्वामित्व अर्थात उत्पादन के सामाजिक सम्बन्ध। उत्पादन की प्रक्रिया में श्रम का नियंत्रण उत्पादक शक्तियाँ (forces of production) करती हैं। श्रमिक और उत्पादन के साधन नही संयुक्त होकर उत्पादक शक्तियों का काम करते हैं।

ब. **उत्पादन रीति का क्षेत्रीय संरचना** (Regional Structure of the Mode of Production) : उत्पादन–रीति को उसके ऐतिहासिक क्षणों के संदर्भ में परिभाषित किये जाने पर उसकी क्षेत्रीय संरचनायें आलोकित होती हैं। उत्पादन–रीति की क्षेत्रीय संरचनाओं का निर्धारण उसकी वैश्विक संरचना द्वारा ही किया जाता है। उत्पादन–रीति के जिन तीन मूलभूत तत्वों के सामान्य एकीकरण से वैश्विक संरचना का जन्म होता है उन्हीं तत्वों के विशिष्ट व्यवस्थापन (specific arrangements) से क्षेत्रीय संरचनाऐं प्रकाश में आती हैं। अब तक के इतिहास में चार प्रकार की क्षेत्रीय संरचना प्रकाशित हुयी है। सामन्ती उत्पादन–रीति, संक्रमणशील उत्पादन रीति, पूँजीवादी उत्पादन–रीति तथा सामाजवाद उत्पादन–रीति। ये क्षेत्रीय उत्पादन–रीतियाँ विभिन्न एतिहासिक सम्बन्धों के अनुरूप श्रमिकों और अश्रमिक के संभव सम्बंधों को प्रतिबिम्बित करती हैं। सामन्ती उत्पादन रीति में अश्रमिक भूस्वामी जमीन का मालिक होता है, परन्तु यह निर्णय कृषि श्रमिक के हाथों में है कि जमीन का उपयोग कैसे किया जाय। संक्रमणशील घरेलू उत्पादन–रीति में मशीनरी का मालिक तो श्रमिक होता है, परन्तु यह निर्णय लेने का अधिकार अश्रमिक पूँजीपति दलाल (cpaitailst middleman) के हाथ में होता है कि उस पर क्या पैदा किया जाय। पूँजीवादी तथा समाजवादी उत्पादन–रीतियाँ श्रमिक की क्रमशः अधीनस्थ उत्पादन रीतियाँ होती हैं।

3. **समाज की संरचनात्मक मार्क्सवादी व्याख्या** (Structural Marxist Interpretation of Society) : आल्थूसर के अनुसार, कार्ल मार्क्स समाज को अन्तः सम्बन्धित व्यक्तियों की समष्टि नहीं, अपितु अन्तः

सम्बन्धित व्यवहारों (Interconnected practices) को जटिल समष्टि (Compex whole) मानते हैं[21] किसी भी उत्पादन–रीति से जुड़ी उत्पादक शक्तियाँ और उत्पादन–सम्बन्ध एकीकृत हो कर कच्चे माल को उत्पाद (Product) का रूप देते हैं। कच्चे माल के रूपान्तरण की इसी प्रक्रिया को आल्थूसर 'व्यवहार' (Practice) का नाम देते हैं।[22] कोई व्यवहार, स्वयं भी अनेक विभिन्न अंगों से निर्मित होने के कारण समष्टि ही होता है, व्यष्टि (Individual) नहीं। व्यवहार चार प्रकार के होते हैं, उत्पादनात्मक, राजनीतिक, वैचारिक और सैद्धान्तिक। उत्पादन के व्यवस्थित साधनों का सिलसिलेवार प्रयोग करते हुए प्राकृतिक पदार्थों को उपयोगी उत्पादों में रूपान्तरित करने की प्रक्रिया उत्पादनात्मक व्यवहार (Production practices) कहलाती है। एक तरह के समाजिक सम्बन्धों को नये तरह के सामाजिक सम्बन्धों में रूपान्तरित करने की प्रक्रिया को राजनीति व्यवहार कहते हैं। कानून और राज्य से सम्बन्धित व्यवहार राजनीतिक व्यवहार की श्रेणी में आते हैं। अतः राजनीतिक व्यवहार को राजनीतिक–विधिक व्यवहार भी कहते हैं। वैचारिक व्यवहार (Ideological practices) चेतना के धार्मिक, नैतिक, राजनैतिक एवं विधिक कल्याण रूपान्तरण की प्रक्रिया है। सैद्धान्तिक या वैज्ञानिक व्यवहार (theroretical or scientific practices) वे होते हैं जो प्रतिनिधानों, अवधारणाओं एवं तथ्यों को सिद्धान्तों में रूपान्तरित करते हैं। आल्थूसर के अनुसार, वैज्ञानिक मार्क्सवाद के अन्तर्गत समाज को समष्टिमूलक इन्हीं व्यवहारों की अन्तःक्रिया से उत्पन्न एक जटिल समष्टि माना गया है। सुसन जेम्स के शब्दों में, ''समाज को ऐसी अन्तः सम्बन्धित समष्टियों अर्थात आर्थिक व्यवहार, वैचारिक व्यवहार एवं राजनीतिक–विधिक, व्यवहार का संकुल माना जाता है जो मिलकर एक जटिल समष्टि का निर्माण करती है।[24]

उत्पादक शक्तियों और उत्पादन सम्बन्धों से प्रत्यक्षतः जुड़े हुये उत्पादनात्मक व्यवहार (Prodction practices) किसी भी समाज के आधार होते हैं। उत्पादनात्मक व्यवहारों की प्रकृति आर्थिक होती है। अतः इनसे निर्मित समाज का आधार भी आर्थिक होता है। समाज के इसी आर्थिक आधार पर किसी तिमंजिली इमारत की प्रथम मंजिल पर उसकी दूसरी और तीसरी मंजिलें टिकी होती हैं।[25] स्वयं अधिसंरचना के भी दो स्तर होते हैं– राजनीतिक विधिक संरचना तथा वैचारिक संरचना। अधिसंरचना के ये दानो ंस्तर क्रमशः राजनीतिक व्यवहार के तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक व्यवहार के परिणाम होते हैं और प्रथम मंजिल पर टिकी दूसरी एवं तीसरी मंजिलों के समान होते हैं।

आल्थूसर के अनुंसार, वैज्ञानिक मार्क्सवाद आर्थिक आधार एवं राजनीतिक विधिक वैचारिक अधिसंरचना के बीच कोई ऐसा साधारण आर्थिक निर्धारणवादी सम्बन्ध नहीं मानता जिसमें आर्थिक व्यवहार को स्वतंत्र मानते हुये उसी के सन्दर्भ में समाज के शेष पहलुओं की व्याख्या की जा सके। इसके विपरीत, मार्क्सवाद किसी भी समाज में निहित सभी व्यवहारों को परस्पर निर्भर एवं एक–दूसरे के संदर्भ में परिभाषित किया जाने योग्य मानते हैं।[26] इतना अवश्य है कि इसकी निगाह में समाज के विभिन्न पहलुओं को वैधता प्रदान करता एवं उनका पथ–प्रदर्शन करता है। यह सर्वाधिक प्रभावशाली पहलू कोई भी हो सकता है, धार्मिक, आर्थिक या कोई भी। उदाहरणार्थ, सामन्ती समाज–व्यवस्था में सर्वाधिक प्रभावशाली पहलू 'धार्मिक' था, जबकि पूँजीवादी समाज–व्यवस्था का सर्वाधिक प्रभावशाली पहलू आर्थिक है। समाज के इस सर्वाधिक प्रभावशाली पहलू को आल्थूसर प्रभावशाली दृष्टांत (Dominant instance) की संज्ञा देते हैं।[27] समाज के विभिन्न पहलुओं में से कौन सा पहलू प्रभावशाली दृष्टांत है, इसका निर्धारण आर्थिक संरचना ही करती है।[28] परन्तु यह कार्य आर्थिक संरचना कर सके, इसके लिए स्वयं उसका वैध एवं नियंत्रित होना आवश्यक है, और आर्थिक संरचना की वैधता प्रदान करने एवं नियंत्रित करने का दायित्व समाज का प्रभावशाली दृष्टांत करता है।[29]

4. **सामाजिक परिवर्तन का सिद्धान्त** (Theory of Social change) : आल्थूसर के अनुसार, वैज्ञानिक मार्क्सवाद सही अर्थ में सामाजिक परिवर्तन का सिद्धान्त है। कुछ आलोचकों की धारणा है कि कार्ल मार्क्स उत्पादक शक्तियों और उत्पादन सम्बन्धों के सहज अन्तर्विरोध को सामाजिक परिवर्तन का सकमात्र स्रोत मानते हैं। परन्तु आल्थूसर मार्क्सवाद की इस व्याख्या से सहमत नहीं है। स्वयं उनका मत है कि मार्क्स उत्पादक शक्तियों एवं उत्पादन– सम्बन्धों के अन्तर्विरोध को क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए

आवश्यक स्थिति की एक अनिवार्य शर्त मानते हैं, परन्तु वे इसे ही सर्वस्व नहीं मानते। मार्क्स के अनुसार, क्रान्तिकारी परिवर्तन की स्थिति तब आती है जब अनतर्विरोध के तत्व आर्थिक उत्पादन के स्तर से निकलकर अधिसंरचना के विभिन्न संघटकों तक पहुँच जाते हैं।[30] इतना ही नहीं महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन आ सके, इसके लिए सभी संरचनात्मक स्तरों (आर्थिक, राजनीतिक, विधिक एवं वैचारिक–सैद्धान्तिक सभी) के अन्तर्विरोधों का एकजुट होना भी अनिवार्य है। विभिन्न परिस्थितियों एवं समाजिक धाराओं (Socail currents) का संचित होकर एक ऐसी संद्वारक एकता (ruptural unity) का रूप ले लेना अनिवार्य है जिसमें विरोधी शक्तियाँ एक ही स्थान और क्षेत्र में संघनित (condense) हो उठती है। विभिन्न अंतर्विरोधों के विस्थापन (dispiacement) एवं संघनन (condensation) इस स्थिति को फ्रायड के शब्द का प्रयोग करते हुए आल्थूसर 'अतिनिर्धारण' (over determination) नाम देते हैं।[31] अतिनिर्धारण के परिणामस्वरूप उत्पन्न संहारक स्थिति वह स्थिति होती हैं जिसमें अपार जनसमूह एकजुट होकर शासन पर हमला बोल देता है और शासक वर्ग अपने शासन की रक्षा करने में नाकामयाब हो जाता है। इस संहारक स्थिति का चित्रण करते हुए आल्थूसर लिखते हैं, ''अगर इस अन्तर्विरोध को सर्वाधिक दमदार अर्थ में सक्रिय होना है तथा एक संहारक सिद्धान्त बनना है तो परिस्थितियों और धाराओं का संचयन अनिवार्य है ताकि अपनी अलग–अलग उत्पत्तियों एवं अलग–अलग आशयों के बावजूद वे परिस्थितियाँ और धारायें एक संहारक एकता के रूप में संश्लिष्ट हो सकें तथा अपार जनसमूह समूहित होकर शासन पर ऐसा हमला बोले कि शासक वर्ग उसे बचाने में असमर्थ हो जाय।[32]

समीक्षा

मैल्कम वाटर्स[33] की निगाह में, आल्थूसर का संरचनात्मक मार्क्सवाद समाजशास्त्र के क्षेत्र में सर्वाधिक विकसित संरचनावादी सिद्धान्त है। वाटर्स के ही अनुसार इस सिद्धान्त में आल्थूसर ने मार्क्सवाद को छुद्र आर्थिक निर्धारणवाद (Vulgar economic materiailism) के आरोप से मुक्ति दिलायी है। इसी प्रयास में उन्होंने पूंजीवाद के अनुरक्षण एवं पतन दोनों के लिए ऐसी व्याख्यात्मक सम्भावनाओं को प्रकाशित किया है जिनका पहले किसी को पता ही न था। इतना ही नहीं, आर्थिक संरचनाओं के साथ–साथ राजनीतिक एवं वैचारिक संरचनाओं को भी अपने अध्ययन के दायरे में लाकर आल्थूसर ने वृहद सैद्धान्तिक परम्परा को आगे बढ़ाने का श्रेय भी अर्जित किया है। एक बात और मार्क्सवाद की संरचनावादी व्याख्या में समाज को व्यक्तियों की या व्यक्तिगत क्रियाओं की समष्टि के बदले सामाजिक व्यवहारों की जटिल समष्टि मानकर आल्थूसर ने मार्क्स को इतिहास की एक नयी अवधारणा के अनुसार इतिहास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तिगत कर्त्ता मृत (the death of individual or subject) होता है अर्थात उसकी भूमिका महत्वहीन होती है।[34] स्मरणीय है कि एक प्रचलित व्याख्या के अनुसार, सामाजिक घटनायें व्यक्तिगत व्यक्तित्वों (individual person) की इच्छाओं, विश्वासों, तरजीहों, निर्णयों आदि का परिणाम होती हैं। आल्थूसर इस तरह की किसी भी व्याख्या को गलत मानते हैं क्योंकि उनके अनुसार व्यक्ति और उसकी सभी क्षमतायें सामाजिक व्यवहारों का ही परिणाम होती हैं। जो भी हो, आल्थूसर के सिद्धान्त ने 1970 के दशक में मार्क्सवादी विचारधारा और समाजशास्त्र दोनों ही के अन्तर्गत प्रचुर विवाद को जन्म दे दिया था। इस विवाद से उपजे कुछ प्रमुख आरोप यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत है :

1. मैल्कम वाटर्स के अनुसार, आल्थूसरवाद 1970 के दशक का एक रहस्यमय सैद्धान्तिक चक्करदार मार्ग (Mysterious theoretical detour) साबित होकर रह गया है जिसकी एक पक्षीयता के कारण संरचनात्मक मार्क्सवाद पोषित होने के बदले मृत्यु को प्राप्त हो गया।[36] स्मरणीय है कि 1970 के दशक में आल्थूसर ने यह महसूस करना शुरू कर दिया था कि ऐतिहासिक भौतिकवाद को विज्ञान की प्रस्थिति प्रदान करने का उसका प्रयास असफल हो गया।[37]
2. ई. पी. थाम्सन (E. P. Thomson) ने आल्थूसर की अवधारणा की कटु आलोचना की है जिसमें उन्होंने इतिहास को कर्त्ता विहीन प्रक्रिया (a process without subject) के रूप में परिभाषित किया है।[38] थाम्सन ने मार्क्सवाद के उस मानवतावादी पक्ष पर बल दिया है जिसका आल्थूसर ने

विरोध किया है। आल्थूसर के विरूद्ध थामसन का मानना है कि (अ) मानव व्यक्ति संरचना की कठपुतली मात्र नहीं होता, (ब) वर्ग कोई संरचना नहीं होते, अपितु संघर्ष और विरोध की स्थिति में उत्पन्न घटनायें होते हैं तथा (स) इतिहास को समझने के लिए मानव–चेतना के विकास को समझने की आवश्यकता होती है, न कि व्यवहार को।[39]

3. मैल्कम वाटर्स के अनुसार, अनेक आलोचकों का आरोप है कि आल्थूसर कर्त्ता को मारने में सफल नही ंहो सके हैं, उन्होंने कर्त्ता की मृत्यु का अल्पसैद्धांतीकरण (undertheorized) मात्र किया है।[40]
4. हिंडेस और हर्स्ट (Hindess and Hirst) जैसे ब्रिटिश समाजशास्त्रियों ने आल्थूसरवाद सहित संरचनात्मक निर्धारणवाद के सभी सिद्धान्तों पर असफल होने का आरोप लगाया है क्योंकि उनके अनुसार ये सिद्धान्त केवल साझा स्थितियों की व्याख्या कर सकते हैं, परन्तु व्यक्तियों के बीच विद्यमान विशिष्ट भेदों की व्याख्या नही ंकर सकते।[41]

जो भी हो, आल्थूसर द्वारा प्रस्तुत मार्क्सवाद की संरचनावादी व्याख्या निष्फल नहीं गयी है। सुसान जेम्स[42] का मानना है कि आल्थूसरवाद की असफलता ने जितना अपने खण्डन के लिए सामाजिक सैद्धान्तिकों को उत्प्रेरित किया है उससे कहीं अधिक उन्हें विकल्पात्मक अभिगमों (approaches) की गवेषणा के लिए प्रेरित किया है। सुसान जेम्स के ही अनुसार, सामाजिक सिद्धान्त के क्षेत्र में इसने 'संरचना' और अभिकरण के सम्बन्धों में अध्ययनकर्ताओं की अभिरूचि को पुनर्जीवित किया है। और तो और, इसने स्वयं मार्क्सवादियों को भी ऐतिहासिक भौतिकतावाद की ताजी व्याख्या के लिए उत्प्रेरित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. देखें, रित्जर, जार्ज (चतुर्थ संस्करण), 'सोसियलॉजिकल थ्योरी', न्यूयार्क : द मैक्ग्रा–हिल कम्पनीज, इन्क, पृ0 593।
2. वही, पृ0 594 (थोड़ा परिवर्तन के साथ), 596।
3. एण्डर्सन, आर. जे. ह्यूज, जॉन ए. तथा शेरॉक, डब्ल्यू. डब्ल्यू (1986) 'फिलासफी ऐण्ड द ह्यूमन साइंसेज, लन्दन तथा सिडनी, कम हेल्थ, पृ0 101–102।
4. स्टरॉक, जान (सम्पादक) स्ट्रक्चरलिज्म ऐण्ड सिंस आक्सफर्ड : आक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1986 पृ0 5।
5. रिजर जार्ज पूर्वाक्त, पृ0 595–96।
6. वही, पृ0 594।
7. वही
8. वाटर्स, मैल्कम मॉडन सोसियलकिल थियरी, लन्दन : सेज पब्लिकेशनस, 1994 पृ0 122।
9. ऐण्डर्सन, आर.जे. इत्यादि, पूर्वोक्त, पृ0 101–102।
10. देखें वाटर्स, मैल्कम, पूर्वोक्त, पृ0 116।
11. रित्जर, आई पूर्वोक्त, पृ0 596।
12. कोलाकावस्की लेस्जेक, 'मेन करेंट्स ऑफ मार्क्सिजम : इट्स ओरिजिन ग्रोथ ऐण्ड डिसोल्यूशन।
13. सुसान जेम्स, ''लुई आल्थूसर'', अन्तर्गत स्किनर, क्वेंटिन 'द रिटर्न ऑफ ग्रैण्ड थियरी इन।
14. वही, पृ0 145।
15. कोलाकोवस्की, लेस्जेक, पूर्वोक्त।
16. वही, पृ0 484।
17. ऐण्डर्सन, आर. जे. आदि, पूर्वोक्त पृ0–52।
18. वही
19. वही

20. वाटर्स, मैल्कम, पूर्वोक्त, पृ0 116–120।
21. जेम्स, सुसान, पूर्वोक्त, पृ0–146।
22. वाटर्स, मैल्कम, पूर्वोक्त, पृ0– 117–118।
23. वही, पृ0 118।
24. जेम्स सुसान, पूर्वोक्त, पृ0–146।
25. वाटर्स, मैल्कम, पूर्वोक्त, पृ0 118–19।
26. जेम्स, सुसान, पूर्वोक्त, पृ0 146।
27. वही
28. वही
29. वही
30. वाटर्स, मैल्क्म, पूर्वोक्त पृ0 121
31. वही, जेम्स, सुसान पूर्वोक्त पृ0 146
32. उद्धृत, अन्तर्गत जेम्स, सुसान, वही
33. वाटर्स, मैल्कम, पूर्वोक्त, पृ0– 131।
34. जेम्स, सुसान, पूर्वोक्त, पृ0 157।
35. वही
36. वाटर्स, मैल्कम, पूर्वोक्त, पृ0 127
37. जेम्स, सुसान, पूर्वोत्तक, पृ0–155, कोलाकोवस्की, पूर्वोक्त, पृ0 486।
38. जेम्स, सुसान, पूर्वोक्त, पृ0 157
39. वाटर्स, मैल्कम, पूर्वोक्त, पृ0 127
40. वही
41. वही
42. जेम्स, सुसान, पूर्वोक्त, पृ0 156।